

HBCHRC पंजाब ने किया पहला एलोजेनिक स्टेम सेल प्रत्यारोपण

17 वर्षीय बहन ने कैंसर से जूझ रहे 10 वर्षीय भाई की जान बचाने के लिए बोन मैरो दान किया

नया चंडीगढ़, 15 सितंबर: एक 17 वर्षीय बहन ने अपने 10 वर्षीय भाई को, जो ब्लड कैंसर (ल्यूकेमिया) से जूझ रहा था, अपने स्टेम सेल दान करके उसको नया जीवन दिया, जिसके साथ ही नया चंडीगढ़ स्थित होमी भाभा कैंसर अस्पताल एवं अनुसंधान केंद्र (HBCH&RC) में पहला सफल एलोजेनिक बोन मैरो ट्रांसप्लांट (BMT) किया।

पश्चिम बंगाल के दुर्गापुर का रहने वाला यह 10 वर्षीय बच्चा इस साल अप्रैल में तीव्र लिम्फोब्लास्टिक ल्यूकेमिया (ALL) के दूसरे रिलैप्स (बीमारी की वापसी) से पीड़ित पाया गया था। उसका इलाज जारी रखने के लिए परिवार पंजाब आया और परमाणु ऊर्जा विभाग (भारत सरकार) के तहत टाटा मेमोरियल सेंटर की एक इकाई HBCH&RC में भर्ती हुआ। गहन कीमोथेरेपी के बाद वह ठीक हो गया। हालांकि, बीमारी के दोबारा लौटने के उच्च जोखिम को देखते हुए, सबसे अच्छे इलाज के रूप में एक एलोजेनिक स्टेम सेल ट्रांसप्लांट की सलाह की गई थी।

एलोजेनिक बोन मैरो ट्रांसप्लांट, जिसे स्टेम सेल ट्रांसप्लांट भी कहा जाता है, एक ऐसा इलाज है जिसमें रोगी की बीमार रक्त-निर्माण प्रणाली (बोन मैरो) को किसी अन्य व्यक्ति से प्राप्त स्वस्थ रक्त-निर्माण स्टेम सेल से बदल दिया जाता है।

बाल हेमेटोलॉजिस्ट-ऑन्कोलॉजिस्ट और BMT चिकित्सक डॉ. जसमीत सिद्धू ने बताया, "विस्तृत डोनर मूल्यांकन के बाद मरीज की बड़ी बहन को सबसे उपयुक्त डोनर के रूप में पहचाना गया। उसके स्टेम सेल एकत्र किए गए और एक नस के माध्यम से उसके भाई में चढ़ाए गए। प्रत्यारोपित कोशिकाएं सफलतापूर्वक स्थापित हो गईं और, करीब निगरानी तथा देखभाल के बाद, बच्चा अब स्वस्थ हो गया है और मंगलवार को अच्छी सेहत में अस्पताल से छुट्टी पा चुका है। हम ट्रांसप्लांट के बाद की अवधि में भी उसकी बारीकी से निगरानी करना जारी रखेंगे।"

मेडिकल ऑन्कोलॉजी विभाग की प्रमुख डॉ. सीमा गुलिया ने कहा, "प्रत्यारोपण के लिए सावधानीपूर्वक योजना, सटीक डोनर चयन, संक्रमण से बचाव और गहन सहायक देखभाल की आवश्यकता होती है। समर्पित बाल चिकित्सा ऑन्कोलॉजी इकाई से लैस अस्पताल का मेडिकल ऑन्कोलॉजी विभाग वयस्क और बाल चिकित्सा रोगियों के लिए मोनोक्लोनल एंटीबॉडी, काइमेरिक एंटीजन रिसेप्टर टी-सेल (CAR-T) थेरेपी, इम्यूनोथेरेपी और लक्षित उपचार जैसी आधुनिक उपचार सुविधाओं से सुसज्जित है। यह उल्लेख करना प्रासंगिक है कि यहां उपचार अत्यधिक सब्सिडी वाला है।"

HBCH&RC पंजाब के निदेशक डॉ. आशीष गुलिया ने कहा, "हमारे लिए, यह न केवल एक चिकित्सीय मील का पत्थर है बल्कि एक गहरा मानवीय क्षण भी है। भाई-बहन की यह कहानी उस उम्मीद को

दर्शाती है जो उन्नत कैंसर देखभाल ऐसे परिवारों को दे सकती है जो अपने जीवन के सबसे कठिन दौर का सामना कर रहे हैं। हमने यह सुनिश्चित किया कि मरीज के परिवार को चिकित्सा, भावनात्मक और वित्तीय रूप से समर्थन मिले। अस्पताल की मेडिकल सोशल वर्क टीम ने सरकारी योजनाओं और सीएसआर सहायता के माध्यम से 14 लाख रुपये से अधिक की वित्तीय सहायता प्रदान की, साथ ही इलाज के दौरान परिवार के लिए धर्मशाला में रहने की व्यवस्था भी की।"

डॉ. गुलिया ने आगे कहा, "2024 में BMT कार्यक्रम की शुरुआत के बाद से, अस्पताल ने 15 स्टेम सेल ट्रांसप्लांट और तीन CAR-T सेल थेरेपी इंप्लूजन किए हैं, ताकि कठिन रक्त कैंसर वाले मरीजों को संभावित रूप से ठीक करने वाला इलाज मिल सके। हम पूरे उत्तर प्रदेश और उत्तर भारत में किफायती लागत पर विश्व स्तरीय कैंसर उपचार प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध हैं।"
